विदेश मंत्रालय द्वारा 22 से 24 सितम्बर, 2012 तक जोहांसबर्ग में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन की रिपोर्ट।

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 22.9.2012 से 24.9.2012 तक दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग शहर में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन में प्राधिकरण के निगमित मुख्यालय से सदस्य (मानव संसाधन) व उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने भाग लिया ।

सम्मेलन का उद्घाटन 22 सितम्बर, 2012 को सेंटन कन्वेंशन सेंटर, नेलसन मंडेला सभागार में भारत सहित दुनिया के अलग-अलग देशों से पधारे लगभग 600 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में भारत की विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ ।

उद्घाटन कार्यक्रम भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र, जोहांसबर्ग एवं डर्बन के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत स्वागत गान से हुआ । इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका के कोजीनाथी ग्रुप द्वारा स्वागत गान भी प्रस्तुत किया गया । श्रीमती प्रनीत कौर एवं मंच पर उपस्थित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलन कर सम्मेलन की औपचारिक शुरूआत हुई ।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय उच्चायुक्त श्री वीरेन्द्र गुप्ता ने अपने स्वागत भाषण में दक्षिण अफ्रीका के साथ भारत के संबंधों व दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी की भूमिका को याद किया । उनके इस कथन ने सबका मन मोह लिया कि - भारत ने गांधी जी को एक बैरिस्टर के रूप में दक्षिण अफ्रीका भेजा था किन्तु दक्षिण अफ्रीका ने उन्हें महात्मा बनाकर वापस भारत भेजा । उनके इस कथन का सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया ।

उद्घाटन समारोह में उपस्थित प्रतिनिधियों को हिन्दी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ्रीका की अध्यक्षा सुश्री मालती रामबली, विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) श्री एम. गणपति , महात्मा गांधी की प्रपौत्री सुश्री इला गांधी, दक्षिण अफ्रीका के उप विदेश मंत्री मारिशस फ्रांसमन, मारिशस के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी, भारत की विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर, सांसद श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी तथा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री श्री प्रवीण गोर्धन ने संबोधित किया ।

उद्घाटन सत्र के तुरन्त बाद समारोह परिसर में दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में जीवन पर्यन्त समर्पित पंडित वेदालंकार की प्रतिमा का अनावरण विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर द्वारा किया गया ।

इस अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिसमें हिन्दी साहित्य दर्शन, विज्ञान , सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी विषयों पर पुस्तकें प्रदर्शित की गई । सी-डेक, महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्री हिन्दी विश्वविद्यालय,

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान-आगरा तथा नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा अपने संगठन से संबंधित साहित्य एवं गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया ।

उद्घाटन समारोह के पश्चात् , भोजन अवकाश के बाद, शैक्षिक सत्रों का सिलसिला आरंभ हुआ जो दो दिन तक चला। इस दौरान निम्नांकित विषयों पर चर्चा हुई तथा विभिन्न विद्वानों द्वारा विषय से संबंधित लेख पढ़े गए:-

i. भाषा की अस्मिता और हिन्दी का वैश्विक संदर्भ ।

Ii. महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ ।

Iii. लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिन्दी ।

Iv. हिन्दी के विकास में विदेशी/प्रवासी भारतीयों की भूमिका ।

V. हिन्दी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका ।

Vi. सूचना प्रौद्योगिकी : देवनागरी लिपि और हिन्दी का सामर्थ्य ।

Vii. ज्ञान-विज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में हिन्दी ।

Viii. हिन्दी : फिल्म, रंगमंच और मंच की भाषा ।

Ix. विदेश में भारत : भारतीय ग्रंथों की भूमिका ।

x. अफ्रीका में हिन्दी शिक्षा - युवाओं का योगदान ।

प्राधिकरण के प्रतिनिधि मंडल ने 'महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ' विषय से संबंधित सत्र में भाग लिया ।

इस सत्र में प्रो0 कृष्णदत्त पालीवाल ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया । इस सत्र में श्री मधुकर उपाध्याय, श्री विजय बहादुर सिंह, प्रो0 नन्द किशोर आचार्य ने अपने विचार व्यक्त किए तथा अध्यक्षीय उद्बोधन श्री विभूतिनारायण राय द्वारा दिया गया।

दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि प्रो0 राम भजन सीताराम ने शैक्षिक स्तर में अपने विचार व्यक्त किए । उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने कुछ समय के लिए 'सूचना प्रौद्योगिकी - देवनागर लिपि और हिन्दी का सामर्थ्य' से संबंधित सत्र में भी भाग लिया जिसमें उन्होंने सी-डेक के प्रस्तुतिकरण को देखा जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित विभिन्न सॉफ्टवेयरों व उनके उपयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई ।

23.9.2012 को प्रतिनिधि मंडल ने 'ज्ञान-विज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में हिन्दी' में भाग लिया जिसमें बीज वक्तव्य प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्गल द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन प्रो0 जबीर हुसैन ने प्रस्तुत किया। सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री नीनोंग इरींग, संसद सदस्य थे । सत्र में प्रसिद्ध कहानीकार श्रीमती ममता कालिया, प्रो0 आर एस सराजू तथा दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि मोहम्मद कुंजू मथारू ने अपने विचार व्यक्त किए । इसके अतिरिक्त लगभग अन्य सभी सत्रों में थोड़ी - थोड़ी अवधि के लिए विद्वानों के विचार सुने गए ।

सम्मेलन का समापन 24 सितम्बर, 2012 को किया गया जिसके आरंभिक सत्र की अध्यक्षता श्री एम. गणपति, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय द्वारा की गई । औपचारिक समापन सत्र 11.00 बजे आरंभ हुआ जिसमें भारत की विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर मुख्य अतिथि थी । इस अवसर पर सांसद श्री मणिशंकर अय्यर का ओजस्वी भाषण सबसे महत्वपूर्ण रहा । अपने भाषण में उन्होंने हिन्दी भाषियों का आह्वान किया कि वे अपने आपको अन्य भारतीय भाषाओं से जोड़ें ताकि हिन्दीतर भाषी भी हिन्दी के साथ अच्छी तरह से जुड़ सकें । समापन सत्र में मारिशस के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी की उपस्थिति भी महत्वपूर्ण रही व उन्होंने अक्तूबर माह में मारिशस में आयोजित किए जा रहे प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर पर सभी को आमंत्रित किया । हिन्दी शिक्षा संघ के श्री हीरालाल सेवानाथ ने अपने भाषण में दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी के बढते प्रयोग पर प्रकाश डाला तथा उनकी संस्था द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी।

समापन सत्र में हिन्दी के 20 विदेशी व 20 भारतीय विद्वानों को सम्मानित किया गया । विदेशी विद्वानों में आस्ट्रेलिया, रूस, इटली, मारिशस, यूक्रेन, जर्मनी, जापान, दक्षिण अफ्रीका तथा बुलगारिया इत्यादि से आए विद्वान शामिल थे । भारतीय विद्वानों में श्री बाल कवि बैरागी, श्री हिमांशु जोशी, प्रो0 जबीर हुसैन, श्री मधुकर उपाध्याय तथा डा0 गिरिजा शंकर त्रिवेदी इत्यादि शामिल थे ।

समापन सत्र में विश्व हिन्दी सम्मेलन में पारित संकल्पों की प्रस्तुति सांसद श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी द्वारा प्रस्तुत की गई व संकल्पों को स्वीकार करने के संबंध में प्रस्तुत प्रस्ताव को सभा में उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा ध्वनिमत से पारित किया गया । यह भी पारित किया गया कि अगला विश्व हिन्दी सम्मेलन भारत में आयोजित किया जाएगा । अन्त में भारतीय उच्चायुक्त श्री वीरेन्द्र गुप्ता द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्मेलन का समापन हुआ ।

अंतिम कार्यक्रम के रूप में उपस्थित प्रतिनिधियों के लिए कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी के मूर्धन्य कवियों यथा प्रो0 शेरजंग गर्ग, डा0 कुंवर बेचैन, श्री अशोक चक्रधर, श्री बालकवि बैरागी, डा0 बुद्धिनाथ मिश्र इत्यादि कवियों ने काव्यपाठ किया । कवि सम्मेलन का संचालन सुप्रसिद्ध कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया ।

सम्मेलन की समाप्ति पर प्रतिनिधि मंडल 26.9.2012 को वापस भारत लौटा ।